<u>एपिसोड- 44</u>

रेडियो धारावाहिक ग्लोबल गर्मी

एपिसोड शीर्षक : बढ़ती गर्मी और बेचैन जंगल

अवधि : 27 मिनट

स्क्रिप्ट : श्रीनिवास ओली

अनुवादक: सुकन्या दुत्ता

पात्र परिचय :

पेड़ दादा : पुरुष स्वर (बुजुर्ग / भारी आवाज़)

गौरी चिड़िया : महिला स्वर

डॉ अविनाश : 50-55 वर्ष / पुरुष

रमा : बीएससी की छात्रा

बघेरा तेंदुआ (leopard) : पुरुष स्वर / रोबदार आवाज़

SIGNATURE TUNE ..... FADE OUT

उद्घोषक : (Welcome + Recap + Intro) : नमस्कार श्रोताओं..। जलवायु परिवर्तन और ग्लोबल वॉर्मिंग पर आधारित विज्ञान धारावाहिक .. "ग्लोबल गर्मी" में आपका एक बार फिर से स्वागत है। आज की कड़ी में हम बात करेंगे गर्म होती धरती से जंगलों पर पड़ रहे असर की। ग्लेशियर और समुद्रों की तरह ही जंगल भी धरती के बढ़ते तापमान से हैरान भी हैं और परेशान भी। क्या कुछ हो रहा है जंगलों में... जानने के लिए चलते हैं एक जंगल में और सुनते हैं पेड़ दादा और गौरी चिड़िया की बातचीत।

---------- **SIGNATURE TUNE**----------

<u>SCENE-1</u>

(जंगल का दृश्य / तेज हवा के पेड़ों से होकर गुजरने की आवाज़ / सूखे पत्तों की फड़फड़ाहट) ((गौरया के चहचहाने की आवाज़ / धीरे-धीरे करीब आती हुई)

पेड़ दादा : गौरी, आज सुबह-सुबह कहां चली गई थी ? कहां से आ रही हो ?

गौरी : कहीं नहीं पेड़ दादा। बस यूं ही पास में सैर कर रही थी।

पेड़ दादा : तुम चिड़ियाओं के तो मजे हैं...। जब मर्जी हुई... पंख फड़फड़ाए और उड़ चले।

गौरी : पेड़ दादा, उड़ने में भला कैसा मजा...। कुछ ही दूर गई थी तो मौसम खराब होने लगा, सो वापस लौट आई।

पेड़ दादा : आज फिर से तेज हवा चलने लगी है। अब तो मौसम का कुछ भी भरोसा नहीं रहा। ना सही समय पर धूप और ना सही समय पर बारिश।

गौरी : हां, पेड़ दादा। मुझे डर लग रहा था कि कहीं मेरा घोंसला भी उड़ ना गया हो। बच्चे भी छोटे हैं ना अभी। (चिड़िया के चूजों की आवाज़) वैसे भी बहुत मेहनत लगती है एक - एक तिनका चुनने में।

पेड़ दादा : हां, हवा तेज तो बहुत है... लेकिन मेरी बूढ़ी टहनियों में अब भी इतनी ताकत है कि वो तुम्हारे घोंसले की हिफाजत कर सकें। (हंसी) क्यों सही कहा ना मैंने ?

गौरी : पेड़ दादा, तुम्हारी ताकत का अंदाजा किसी और को हो या ना हो, मुझे तो है। क्या मैं नहीं जानती कि इस धरती में सभी की जिंदगी के लिए तुम्हारी कितनी अहमियत है। (इठलाते स्वर में) मैं तो तो अपनी बात जानती हूं... दूसरों से मुझे कोई मतलब नहीं ?

पेड़ दादा : गौरी, मुझे पता है - मुझे पता है। लेकिन इंसानों को ये बात पता नहीं कब समझ में आएगी। (हताशा भरा स्वर) शायद जब सब कुछ खोने के बाद ही उन्हें कुछ होश आए।

गौरी : इंसानों की बात तो आप मत ही कीजिए। (हल्के गुस्से में) पता नहीं उनकी अक्ल कहां चले गई है। जिस डाली पर बैठे हैं उसे ही काटने में जुटे हैं। (व्यंग्यात्मक लहजा) और कहेंगे कि इस धरती में हम ही सबसे ज्यादा बुद्धिमान हैं। अक्ल तो है नहीं...।

पेड़ दादा : तुम क्यों गुस्सा कर रही हो गौरी। जब पानी सिर से ऊपर निकलने लगेगा तो शायद अक्ल भी ठिकाने आ जाए। (पेड़ पर कुल्हाड़ी चलने की आवाज़ / कुछ दूरी से आती हुई)

गौरी : देखो - देखो पेड़ दादा। वो फिर आ गये। मैंने कहा था ना ? देख ली इनकी बुद्धि। वैसे ही पूरे जंगल तबाह हो रहे हैं। अब बचे-खुचे पेड़ों को भी नहीं बख्श रहे हैं। (कुल्हाड़ी चलने की आवाज़ पार्श्व में लगातार सुनाई देती है)

पेड़ दादा : वो तो भला हो मेरी बढ़ी उम्र का....। ये तुड़ी-मुड़ी बेडौल टहनियां इनके किसी काम की नहीं... वरना तो ये मुझे भी कब का काट...। (गौरी बीच में बात काटकर बोलती है)

गौरी : (गुस्से में) जरा आकर तो दिखाएं तो आपके पास। अपनी चोंच से उनकी आंखे ना फोड़ दूं तो मेरा नाम भी गौरी नहीं ।

पेड़ दादा : गौरी। इन गांव वालों पर गुस्सा करने का कोई फायदा नहीं। इन्होंने हमारे बहुत सारे साथी पेड़ों को हमने छीना जरूर है लेकिन हमारे सामने इनसे भी ज्यादा बड़े खतरे हैं। और इन खतरों को वक्त रहते नहीं रोका गया तो फिर कोई नहीं बचेगा।

गौरी : (चौंकते हुए) इंसानों से भी बड़े खतरे !

पेड़ दादा : हां गौरी। इंसानों से भी बड़े खतरे। इनकी कुल्हाड़ियां तो हमें नजर आ जाती हैं... लेकिन कुछ दुश्मन ऐसे हैं जो हमें नजर तो नहीं आते हैं। वो हमारे आसपास हैं, हमें खत्म कर रहे हैं और दिखाई भी नहीं देते। और एक दिन इंसानों को भी धरती की तबाही के रूप में इसकी कीमत चुकानी पड़ेगी।

गौरी : (सहमे हुए स्वर में) ओह...। मैंने तो ऐसे किसी दुश्मन के बारे में नहीं सुना है।

पेड़ दादा : हां, लेकिन मैंने तो ऐसे दुश्मन को देखा भी है और उससे लड़ा भी हूं। तुम तो जानती ही हो कि मुझे यहां खड़े-खड़े पचास साल से ज्यादा का वक्त हो गया है। तुम्हारी, मम्मी, नानी सभी का बसेरा इन्हीं टहनियों पर ही था।

(कुल्हाड़ी चलने की आवाज़ पहले तेज होती है फिर अचानक रुक जाती है / पेड़ गिरने की आवाज़)

पेड़ दादा : (दुखी स्वर में) इन नादानों ने आज फिर एक और जान ले ली।

गौरी : लेकिन पेड़ दादा, वो दुश्मन है ? कौन है वो.. जो हमें नजर नहीं आता ?

पेड़ दादा : हां .. हां.. उसी के बारे में तो बता रहा हूं।

(चिड़ियों के चूजों की तेज चहचहाहट सुनाई देती है)

गौरी : ओह, ये बच्चे भी ना...। शायद अब भूख लगने लगी है। पेड़ दादा, बच्चों के खाने का वक्त हो गया है। दुश्मनों की बातें बाद में... अभी मैं जाती हूं, खाने का इंतजाम करना होगा। (**कुछ ऊंचे स्वर में**) आती हूं बच्चो... अभी कुछ लेकर आती हूं तुम्हारे लिए। (**धीरे-धीरे दूर जाती आवाज़**) ज्यादा शोर मत करो। पेड़ दादा को तंग मत करना, समझे (**चिड़ियों के चूजों की चहचहाहट / चिड़िया के उड़ने / पंख फड़फड़ाने की आवाज़ / धीरे-धीरे मंद पड़ती हुई**)

---------- **SCEN TRANSITION MUSIC** ----------

SCENE -2

(जंगल के करीब से गुजरती सड़क पर कार / बीच-बीच में हॉर्न भी / कार रुकने की आवाज़)

रमा : हां, पापाजी, बस... बस...। कार यहीं पर पार्क कर देते हैं।

अविनाश : हां रमा, यही जगह ठीक रहेगी।

(इंजन बंद होने और कार के दरवाजे बंद करने की आवाज़)

अविनाश : ये... सामने देखो रमा। मैं इस जंगल को पिछले पच्चीस-तीस वर्षों से देखते आया हूं। बहुत बड़ा जंगल है ये। इस गांव की सरहद से शुरू होकर सामने की पहाड़ियों तक फैला हुआ।

रमा : वाह ... कितना सुंदर है पापाजी। (उत्साहित स्वर में) मुझे हर्बेरियम (Herbarium) में लगाने के लिए कई किस्म के पत्ते मिल जाएंगे। साथ में कुछ खूबसूरत फोटोग्राफ भी। (सूखे पत्तों पर चलने की आवाज़) क्लास में सबसे बेहतर प्रोजेक्ट बनाना है मुझे। कितना घना है ये जंगल।

(सूखे पत्तों पर चलने की आवाज़ बीच-बीच में बनी रहती है / चलते-चलते बातचीत।

अविनाश : पहले की तुलना में तो कुछ भी घना नहीं है। बहुत कुछ बदल गया है हाल के वर्षों में।

रमा : हां, कॉलेज में प्रोफेसर बता रहीं थीं कि ग्लोबल वॉर्मिंग का असर हमारे जंगलों पर भी पड़ा है।

अविनाश : बिल्कुल सही कहा। गर्म होती धरती का असर तो हर तरफ पड़ा है। चाहे वो जंगल हों या फिर दूसरे जीव-जंतु। धरती का तापमान बढ़ने से ना सिर्फ ग्लेशियर पिघले हैं बल्कि पूरी जलवायु में ही बदलाव आ रहा है।

रमा : पापाजी, दूर से तो ये जंगल बहुत घना नजर आ रहा था, लेकिन अंदर पहुंचकर तो कुछ अलग ही नजारा दिख रहा है।

अविनाश : यही तो चिंता की बात है। कुछ सालों पहले तक यहां इक्का-दुक्का ही चीड़ (Pine) के पेड़ नजर आते थे। पूरा जंगल बांज (Quercus), बुरांश (Rhododendron) और काफल (Bayberry / Myrica esculata) के पेड़ों से भरा था। सामने की पूरी पहाड़ी पर देवदार के खूबसूरत पेड़ थे। इन पेड़ों पर लिपटी हुई जितनी बेलें तुम देख रही हो, उससे कई गुना ज्यादा लंबी और घनी बेल दिखती थीं... तरह - तरह की। (चिड़िया / झिंगुर की आवाज़ें)

रमा : लेकिन अब तो ऐसा नहीं है। जमीन भी सूखी - सूखी है। ऐसे में पेड़ - पौधे पनपेंगे भी कैसे ?

अविनाश : हां, इस रास्ते पर तो हमेशा इतनी नमी रहती कि चलना मुश्किल हो जाता था। साल भर ही ऐसा लगता मानो कुछ देर पहले ही बारिश हुई हो। और ये चीड़ के पेड़ तो नीचे की घाटियों के आसपास ही दिखाई देते थे।

रमा : लेकिन पापाजी, अब तो यहां चीड़ के पेड़ ही ज्यादा नजर आ रहे हैं।

अविनाश : यही तो दिक्कत है। बदलती जलवायु की वजह से जंगलों का रूप भी बदलने लगा है ... और ऐसा सिर्फ हमारे इन जगलों में ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया में हो रहा है।

(बातचीत के दौरान पदचाप / झिंगुरों / चिड़िया की भी आवाज़)

रमा : **(चिंतित स्वर में)** अगर जंगल ही खत्म हो गए तो इसका असर सभी पर पड़ेगा।

अविनाश : बिल्कुल सही कहा रमा। जंगलों की दुनिया में कितना कुछ है...। सैकड़ों किस्म के पेड़ पौधे... कई सारे जंगली जानवर... कीट पतंगे... और ये खूबसूरत पक्षी। (चिड़िया की आवाज़ / धीरे-धीरे दूर जाती हुई)

रमा : हां पापाजी। ये जंगल ना सिर्फ वन्य जीवों को आसरा देते हैं बल्कि हमें भी बहुत कुछ देते हैं। कितना अच्छा लगता है यहां आकर।

(झाड़ियों / सूखे पत्तियों के हिलने की आवाज़ के साथ ही तेंदुए की गुर्राहट / तेज होती हुई)

रमा : (डर से चिल्लाते हुए) पापाजी, ये कैसी आवाज़ है... पापाजी...।

अविनाश : (डर और घबराहट के साथ) रमा... लगता है आसपास कोई तेंदुआ है...। चलो... तेजी से निकलो यहां से... यहां... बाईं तरफ भागो... तेजी से...।

(हांफने और सूखे पत्तों पर दौड़ने की आवाज़) / (तेंदुए की गुर्राहट करीब आती जाती है।)

रमा : (हांफते - हांफते) पापाजी, वो तो हमारे करीब ही आ रहा है...।

अविनाश : रुको मत रमा... रुको मत।

रमा : (रुंआसे स्वर में) नहीं पापाजी.. मुझसे नहीं भागा जाता अब। मैं तो इस पेड़ के पीछे ही छिप जाती हूं।

(तेंदुए की तेज़ गुर्राहट)

पेड़ दादा : (ऊंचे स्वर में) रुको बघेरा...। रुको। (तेंदुए की गुर्राहट धीरे - धीरे मंद पड़ जाती है।) रुक जाओ वहीं पर।

बघेरा : (शुरुआत तेंदुए की गुर्राहट के साथ) पेड़ दादा... । क्यों रोका आपने मुझे। मुझे भूख लगी है।

रमा : (डर और हैरत के साथ) ये कौन बोल रहा है...। किसकी आवाज़ है ये।

पेड़ दादा : डरो मत बेटी.. ये मै हूं। देखो यहां पर...। देखो।

अविनाश : अरे... रमा.. ये आवाज़ तो उसी पेड़ की है जिसके नीचे तुम बैठी हो। बोलता हुआ पेड़ !

पेड़ दादा : हां... यहां तुम हम सबकी भाषा समझ सकोगे.. पेड़ पौधों की भी और पशु पक्षियों की भी।

अविनाश : लेकिन, क्या आप हमें जानते हैं, हमें बचाकर आपने बहुत बड़ा उपकार किया है।

पेड़ दादा : हां... मैं आपको जानता हूं। लेकिन आपने मुझे पहचाना नहीं... ? मैं हूं पेड़ दादा...। और शायद आप अविनाश हैं।

अविनाश : (हैरत के साथ) हां... जी..।

पेड़ दादा : अविनाश जी, मैं आपको तबसे जानता हूं जब आप बचपन में इन जंगलों में आया करते थे।

अविनाश : **(खुशी के साथ)** अरे रमा... ये तो वही पेड़ है जहां मैं बचपन में अक्सर आता था। **(कुछ ऊंची आवाज में)** शुक्रिया पेड़ दादा..। आज आपने हमारी जान बचा दी। वरना ये तेंदुआ तो हमें खा ही जाता।

(तेंदुए की तेज़ गुर्राहट)

पेड़ दादा : अविनाश जी, बघेरे की कोई गलती नहीं। वो करे भी क्या...। जंगल की हालत तो आप लोग देख ही रहे हो। (तेंदुए की तेज़ गुर्राहट) बघेरा, तुम आराम से बैठो अभी।

बघेरा : (हल्की गुर्राहट के साथ) आप ही बताओ पेड़ दादा। क्या करें हम। (गुर्राहट)

अविनाश : डरो मत रमा..। डरो मत। ये सब हमारे दोस्त हैं।

(चिड़िया की चहचहाहट / धीरे –धीरे करीब आती हुई)

पेड़ दादा : ये लो... गौरी भी आ गई।

रमा : वाह.. कितना प्यारा नाम है इस चिड़िया का... गौरी। क्या ये गौरया भी इंसानों से बात कर सकती है ?

गौरी : (चहकते हुए) हां... हां... क्यों नहीं। हम तो हमेशा ही इंसानों से बात करते हैं... लेकिन वो सिर्फ नासमझी का दिखावा ही करते हैं।

अविनाश : ठीक कह रही है गौरी। आखिर हम लोग लोगों ने कुदरत को समझा ही कब। कुदरत से फायदा लिया और इसे नुकसान ही तो पहुंचाया है।

गौरी : लेकिन पेड़ दादा बता रहे थे कि अब तो इंसानों से भी बड़ा खतरा हमारे सामने आ गया है। जिससे आप लोग भी डर रहे हैं। पेड़ दादा.. बताइये ना उसके बारे में।

पेड़ दादा : गौरी, मैं बात कर रहा था बदले हुए मौसम की। बदलता हुआ मौसम आज इस जंगल का एक नया दुश्मन है। देखो जरा, साल - दर साल धरती कितनी गर्म होती जा रही है।

अविनाश : सही कहा पेड़ दादा आपने। लगातार बदलते मौसम के बुरे असर से तो जंगल भी नहीं बच सके हैं। पिछले पच्चीस-तीस वर्षों में ये जंगल भी कितना बदल गया है।

गौरी : मैं कुछ समझी नहीं अविनाश जी।

अविनाश : देखो गौरी। दरअसल बात ये है कि हमारी धरती लगातार गर्म होती जा रही है। और इस गर्मी की वजह हैं वो गैसें जिन्होंने आसमान के ऊपर एक घेरा सा बना दिया है। इस घेरे की वजह से धरती का तापमान लगातार बढ़ता जा रहा है।

बघेरा : लेकिन गर्मी बढ़ने से जंगल पर कैसा असर।

रमा : मैं बताती हूं बघेरा। देखो ये तो तुम्हें पता ही है कि जंगल में सभी जानवर और पेड़ -पौधे एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। ये देखो. पेड़ दादा ने गौरी को रहने का ठिकाना दिया है। आपको भी अपने भोजन के लिए जंगली खरगोश और हिरनों का शिकार करना पड़ता है।

बघेरा : हां, वो तो है। लेकिन इसमें गर्मी बढ़ने की बात का क्या मतलब ?

अविनाश : मतलब है। बस जरा ध्यान से सुनो। तुम भी ध्यान दो गौरी। (समझाने वाले अंदाज में) गर्म होती धरती कई तरह से जंगलों पर असर डाल रही है। जैसे - जैसे गर्मी बढ़ रही है धरती की नमी भी कम होती जा रही है। गर्मी के कारण पेड़ - पौधों में नई पत्तियां तेजी से तैयार हो जाती हैं और इसका नतीजा होता है ज्यादा वाष्पोत्सर्जन यानी पत्तियों से ज्यादा पानी का उड़ना।

गौरी : मेरी तो समझ में अब भी कुछ नहीं आया।

अविनाश : एक तरफ तो गर्मी की वजह से धरती सूख रही है, दूसरी तरफ पेड़ ज्यादा पानी को भाप बनाकर उड़ा रहे हैं। सूखे की वजह से पेड़ भी कमजोर होने लगते हैं। वहीं गर्मी बढ़ने से कीड़े-मकोड़े बड़ी तादाद में इन जंगलों में ज्यादा तेजी से हमला कर रहे हैं।

रमा : लेकिन पापाजी, आप बता रहे थे कि पहले ये जंगल काफी घना था और चीड़ के पेड़ भी कम थे। ये सब कैसे बदला ?

अविनाश : ये भी ग्लोबल वॉर्मिंग का ही असर है। जरा सामने की पहाड़ियों की ओर देखो। जो चोटियां पहले बर्फ से ढकी रहती थीं वहां अब चट्टानें नजर आ रही हैं। तापमान बढ़ने से निचली घाटियों में उगने वाले पेड़ पौधे भी ज्यादा ऊंचाई वाले इलाकों में उगने लगे हैं।

रमा : मतलब ये कि ट्री-लाइन और ऊंचाई की ओर खिसक रही है। लेकिन गर्मी बढ़ने से पेड़-पौधों की बहुत सारी प्रजातियां खुद को इस तापमान के हिसाब से नहीं ढाल पा रही हैं और नष्ट हो जा रही हैं।

बघेरा : अब मैं समझा कि ये जंगल इतना कम घना क्यों होता जा रहा है। लेकिन मैं जिनका शिकार करता था वो सब कहां चले गये ?

अविनाश : देखो बघेरा, तुम जिन हिरणों और खरगोशों का शिकार करते थे वो तो इस इलाके से निकलकर दूसरे घास भरे इलाकों की ओर चले गये। लेकिन हर जंगली जीव के लिए इस तरह से माइग्रेट करना यानी दूसरी जगह जाना तो आसान नहीं... जैसे कि तुम्हारे लिए।

बघेरा : सही कहा अविनाश जी, जैसे ही हम जंगल की सरहद के बाहर निकलते हैं वैसे ही इंसान हमें ही हमलावर समझकर जान लेने की कोशिश करने लगते हैं। (कुछ गुस्से में) जबकि हकीकत ये है कि वो हमारे जंगलों में घुसे हैं ना कि हम उनकी बस्तियो में।

पेड़ दादा : तुम्हारा गुस्सा वाजिब है। लेकिन देखो, अब अपनी नासमझी का नतीजा इंसान को भी भुगतना ही पड़ रहा है।

गौरी : वो सब तो ठीक है लेकिन इस बढ़ती गर्मी से मेरा क्या लेना - देना ?

अविनाश : तुम्हारा भी लेना देना है गौरी। तुम ये बताओ कि क्या तुम्हें आजकल अपने खाने के लिए कीड़े-मकोड़ों की कोई कमी लगती है ?

गौरी : नहीं.. बिल्कुल नहीं। मैं भी खुश हूं और बच्चे भी। (चहचहाहट)

अविनाश : तुम्हारे लिए भले ये खुशी की बात हो लेकिन इसमें भी एक फिक्र छिपी है।

गौरी : वो कैसे ?

अविनाश : गर्म होती धरती की वजह से सर्दियों के बाद वसंत जल्दी से आने लगा है। पहले सर्दियां ज्यादा लंबी चलती थीं और कीड़ों का प्रकोप भी कम रहता था। ठंड के दौरान कीड़ों की तादाद भी धीरे-धीरे बढ़ती है और उनकी लार्वा स्टेज भी कुछ लंबी चलती है। लेकिन बदलता हुआ गर्म मौसम तो कीड़ों के लिए एक वरदान है।

गौरी : हां, मुझे मालूम है कि सर्दियों के दिनों में कीड़ों को खोजना काफी मुश्किल रहता है जबकि बरसात और गर्मियों में तो बिल्कुल भी मशक्कत नहीं करनी पड़ती।

पेड़ दादा : लेकिन यही कीड़े तो हम पेड़ों के लिए दुश्मन हैं गौरी।

गौरी : तभी तो मैं इन्हें खा जाती हूं पेड़ दादा।

(सभी हंसते हैं)

अविनाश : बदलती जलवायु ने ना सिर्फ कीड़ों के जीवन को बदला है बल्कि उससे असर से कोई भी जीव-जंतु नहीं बच सका है। इतना ही नहीं, ग्लोबल वॉर्मिंग ने दुनिया भर में बारिश, तूफान और बर्फबारी का मिजाज भी बदल दिया है। और इसका असर जंगलों पर भी दिखाई देता है।

पेड़ दादा : वो कैसे अविनाश जी ?

अविनाश : ये तो हम सब देख ही रहे हैं कि ग्लोबल वॉर्मिंग से कहीं बेतहाशा बारिश या फिर कहीं भीषण सूखे के हालात बन रहे हैं। तूफानों के आने का वक्त और उनकी ताकत भी बदली है। जब यही तूफान या बारिश जंगलों वाले इलाके में आते हैं तो काफी सारे पेड़ पौधों को तबाह कर जाते हैं। जंगलों में पेड़ों की तबाही का मतलब... जंगल से जुड़े हर जीव जंतु, पशु पक्षी पर मुसीबत।

रमा : जंगलों की एक बड़ी दुश्मन तो जंगलों की आग भी है ना पेड़ दादा ?

पेड़ दादा : बिल्कुल सही कहा गौरी। ये देखो। पिछली बार जब यहां आग लगी थी तो मेरी ये टहनियां झुलस गई थीं। वो तो भला हो बारिश का जो सही वक्त पर आ गई और बस किसी तरह से मेरी जान बच पाई।

अविनाश : हां पेड़ दादा। धरती का तापमान बढ़ने से जमीन की नमी भी कम होती जा रही है। सूखा बढ़ने से जंगलों में आग लगने की घटनाएं बढ़ रही हैं। क्योंकि ये सूखी पत्तियां ईंधन की तरह जलने लगती हैं। इस सबका नतीजा होता है पेड़ों का लगातार कम होना और ये सब एक बुरे चक्र की तरह चलता जा रहा है।

बघेरा : सही बात है। जंगल में पानी के स्रोत लगातार कम हो रहे हैं। मुझे तो पानी की तलाश में कई बार दूर-दूर तक जाना पड़ता है। जंगल से बाहर जाऊं तो अपनी ही जान का खतरा...। जब यहां का जंगल काफी घना था तो यहां पानी की भी कमी नहीं थी।

पेड़ दादा : हमारा और पानी का तो जनम - जनम का साथ है।

गौरी : वो कैसे पेड़ दादा ?

पेड़ दादा : देखो, जब जंगलों में नम हवा या कोहरा आता है तो वो हमारी पत्तियों से टकराता है। हवा की नमी लगातार पत्तियों की सतह पर पानी के अणुओं को जमा करते जाती है और वो पानी बूंद-बूंद कर नीचे धरती पर टपकते रहता है। ऐसा लगातार होते रहने से धरती में नमी बने रहती है जो ना सिर्फ पेड़-पौधों बल्कि कई जंतुओं के लिए लिए भी जरूरी है।

गौरी : जंगल में सभी कुछ एक दूसरे से कितना जुड़ा हुआ है। मुझे तो इतना अंदाजा ही नहीं था।

बघेरा : अब मैं समझा कि मुझे भी शिकार करने में इतनी दिक्कत क्यों हो रही है। गर्मी बढ़ी तो सूखी धरती से घास और पौधे खत्म हो लगे। घास, कोमल पत्तियों वाले पौधे और पानी नहीं रहा तो फिर खरगोश यहां क्या करते। वो भी दूसरे इलाकों की ओर चले गए। (उदास स्वर में) लेकिन हर कोई तो इस जंगल से बाहर नहीं जा सकता ना।

अविनाश : ये सिर्फ तुम्हारी दिक्कत ही नहीं है बघेरा। बहुत सारे पेड़ - पौधों के साथ भी यही परेशानी है। अब तुम इस चीड़ को ही ले लो। जबसे इन पहाड़ों में सर्दियां छोटी और गर्मी का मौसम लंबा होने लगा तो ये चीड़ के पेड़ भी ज्यादा ऊंचाई वाले इलाकों में अपनी जड़ें जमाने लगे। लेकिन हर पेड़ या पौधा तो नई जगह अपना ठिकाना नहीं बना पाता और वो खत्म हो जाता है।

पेड़ दादा : जैसे मैं .. यानी देवदार (Deodar / Cedrus deodara) का पेड़। हमारी प्रजाति के पेड़ दो हजार मीटर से चौबीस सौ मीटर की ऊंचाई में पाये जाते हैं। लेकिन ज्यादातर जगहों से हमारा कुनबा ही खत्म हो रहा है। देवदार के नये जंगल तो शायद ही कहीं देखने को मिलें।

गौरी : हां पेड़ दादा, मैं तो अक्सर घूमते -घामते दूर तक उड़ आती हूं, लेकिन मुझे तो बस आपके परिवार के कुछ ही लोग नजर आते हैं।

अविनाश : सही कहा पेड़ दादा। पेड़ - पौधों की सारी प्रजातियां दूसरी जगह पहुंच खुद को पनपा नहीं पाती हैं। आपके बीज पंखों के सहारे हवा में दूर - दूर तक पहुंच तो जाते हैं लेकिन मुफीद मिट्टी और जलवायु नहीं मिलने से उनसे नये पौधे तैयार नहीं हो पाते। बदली हुई आबो-हवा में ऐसे पेड़ ही जंगलों में हावी हो रहे हैं जिनमें बदले हुए हालात में पनपने की क्षमता है।

पेड़ दादा : सही बात है। मैं यहां देखता हूं कि सूखे में उगने वाले पेड़-पौधों ने खुद को इस माहौल में ज्यादा अच्छी तरह से ढाल लिया है। वो कम पानी होने पर भी पनप जाते हैं और आग लगने पर भी खत्म नहीं होते और खुद को संभाल लेते हैं।

गौरी : बढ़ती गर्मी के असर से जंगलों को तो बचाना ही चाहिये। क्या आप लोग कुछ सोच नहीं रहे हैं इस बारे में ?

अविनाश : क्यों नहीं गौरी। अब ऐसे उपायों पर ध्यान दिया जा रहा है जिससे वातावरण को गर्म करने वाली यानी ग्रीन हाउस गैसों का उत्सर्जन कम हो। विकास कार्यों और पर्यावरण के बीच एक संतुलन बनाना तो जरूरी ही है।

रमा : पापाजी, अभी हमारे देश में जंगलों की क्या स्थिति है ... मेरा मतलब कि क्या भारत में भी जंगल तेजी से घट रहे हैं ?

अविनाश : देखो रमा, अगर हम पर्यावरण मंत्रालय की रिपोर्ट के हिसाब से कहें तो सन दो हजार पंद्रह (2015) की तुलना में सन दो हजार सत्रह (2017) में वनों का क्षेत्रफल बढ़ा है। सन दो हजार पंद्रह में भारत का वन क्षेत्र सात लाख लाख चौदह सौ पिचानबे (701495) वर्ग किलोमीटर था, जिसमें दो साल बाद छे हजार सात सौ अठहत्तर (6778) वर्ग किलोमीटर की बढ़ोतरी हो गई।

पेड़ दादा : ये तो खुशी की बात है लेकिन जिस तरह के जंगल के अंदर के हालात में बदलाव आ रहा है उसे भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। सामने बुरांश का पेड़ दिख रहा है ना तुम्हें.. ?

अविनाश : हां पेड़ दादा...। इसके खूबसूरत सुर्ख फूलों को हम बचपन में खूब इकट्ठा किया करते थे।

पेड़ दादा : लेकिन जबसे मौसम में बदलाव आया तो इसमें फूल के आने का वक्त भी गड़बड़ा गया। सर्दियां इतनी छोटी हैं कि नये पत्ते आना, कली का बनना और फूल बनना ... ये सब कुछ जल्दी-जल्दी होने लगा है। शहद की तलाश में रहने वाली मधुमक्खियां भी इस बदलाव से चकरा गई हैं।

बघेरा : साफ नजर आ रहा है कि ग्लोबल वार्मिंग का सीधा असर पौधों पर तो पड़ा ही है... उनके सहारे जिंदा रहने वाले जीवों को भी अपने खाने की आदतों में बदलाव करना पड़ रहा है।

रमा : आप सब तो हमारे दोस्त हो। पेड़ पौधे लगातार बढ़ रही कार्बन डाईऑक्साइड को सोख रहे हैं और बदले में हमें ऑक्सीजन दे रहे हैं। ये जंगल तो हमारे लिए कुदरत का एक अनूठा फिल्टर हैं। लेकिन बदलती जलवायु सब-कुछ बदलने पर ही आमादा है। (गंभीर स्वर में) जल्द ही हम नहीं जागे तो जंगलों का पूरा ढांचा ही चरमरा जाएगा।

पेड़ दादा : गौरी, तभी तो मैंने बदलती हुई जलवायु को अपना सबसे बड़ा दुश्मन बताया था। एक ऐसा दुश्मन जिसने ना सिर्फ हमारे लिए बल्कि खुद इंसानों के लिए भी मुश्किल खड़ी कर दी है।

बघेरा : लेकिन ये मुश्किल भी तो खुद इंसानों ने ही खड़ी की है। (गुस्से में) उनको इसकी सज़ा जरूर मिलनी चाहिए। (गुर्राहट)

गौरी : हां... हां.. इंसानों को इसकी सजा जरूर मिलनी चाहिए।

पेड़ दादा : (ऊंचे स्वर में) तुम गुस्सा मत करो बघेरा... गुस्सा मत करो।

बघेरा : (तेजी से गुर्राते हुए) नहीं पेड़ दादा। हमारे खूबसूरत जंगल को वीरान बनाने वाले ये इंसान ही हैं। इन्होंने अपने आराम और सुकून के लिए हम सबकी जिंदगी खतरे में डाल दी है। इनको सजा मिलनी चाहिए। (गुर्राता है)

पेड़ दादा : रुको बघेरा... रुको..। आगे मत बढ़ो।

बघेरा : नहीं पेड़ दादा। इंसानों ने बेतरतीब विकास की खातिर धरती को गर्म किया है। ग्लेशियरों को पिघला दिया... नदियों और तालाबों को सुखा दिया...। और... अब हमें भी खत्म करने पर आमादा हैं। मैं इन्हें नहीं छोड़ूंगा।

(जोर से दहाड़ने की आवाज़ / तेज हवा चलने की आवाज़ / डर का माहौल)

रमा : (डर से जोर - जोर से चीखती है) बचाओ... पापाजी ... बचाओ। बचाओ

(तेंदुए के जोर से दहाड़ने की आवाज़ / धीरे - धीरे मंद पड़ती है)

---------- SCEN TRANSITION MUSIC ----------

SCENE-3

(सुबह का वक्त / चिड़ियों के चहचहाने की आवाज़)

रमा : (ऊंनींदे स्वर में बड़बड़ाती है) बचाओ... पापाजी.... बचाओ... ये तेंदुआ मुझे मार डालेगा।

(पदचाप / करीब आते हुए)

अविनाश : क्या हुआ बेटी रमा...। कहां है तेंदुआ ?

रमा : (ऊंनींदे स्वर में) अरे.. मैं कहां हूं... ये क्या... कहां गया वो तेंदुआ...। (सुकून भरा स्वर) ओह .. मैं तो घर पर ही हूं। मैं तो कितना डर गई थी।

अविनाश : लगता है तुमने कोई खतरनाक सपना देखा। कहीं जंगल में गई थी क्या सपने में ? (हल्की हंसी के साथ) लगता है तेंदुए के हमले से ही सपना टूटा है।

रमा : हां पापाजी, सपना डरावना तो था, लेकिन बात बिल्कुल सही थी।

अविनाश : अच्छा ! ऐसा क्या देख लिया तुमने ?

रमा : पापाजी जी, सपने में मैंने पेड़-पौधों का दर्द देखा...., मैंने देखा कि गर्मी होती धरती ने किस तरह के खूबसूरत पेड़-पौधों, जानवरों को हताश और मजबूर कर दिया है। (कुछ दार्शनिक अंदाज में) अगर दुनिया के लोगों ने सही कदम नहीं उठाये तो बुरे सपने को हकीकत बनने में ज्यादा वक्त नहीं लगेगा। सब कुछ खत्म हो जाएगा एक दिन।

अविनाश : (हल्की हंसी के साथ) रमा, तुम तो मुझे आज कुछ ज्यादा ही समझदार लग रही हो। लेकिन अब जल्दी से उठो और तैयार हो जाओ...। कॉलेज भी जाना है। कहीं देर ना हो जाए ।

रमा : हां पापा जी, समझदार तो बनना ही पड़ेगा (खुद से बुदबुदाते हुए) कहीं बहुत देर ना हो जाए..।

- ---------- **CLOSING MUSIC** ---------- -